श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गये कर्म संदेश की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ0 रतन कुमारी वर्मा

श्रीमद्भगवद्गीता मानव कल्याण का ग्रन्थ है। अट्ठारह अध्यायों में विभक्त यह कालजयी रचना सदैव मानव कल्याण से पूरित है। प्रत्येक काल में मानव मात्र के लिए समसामयिक है। भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया कर्म संदेश मानव जीवन का आधार–स्तम्भ है, इसी पथ पर चलकर मनुष्य अपना भी कल्याण कर सकता है, साथ ही साथ मानवता के कल्याण में भी सहायक हो सकता है। श्रीमद्भगवद्गीता का तीसरा अध्याय ''कर्मयोग'' इसी भावना से भरा हुआ है और संपूर्ण संसार को कर्म की प्रेरणा देता रहा है।

कर्म के भी कई प्रकार होते है। प्रथम दूसरों की भलाई के लिए कार्य करना दूसरा दूसरों को नुकसान पहुॅचाने, कष्ट पहुॅचाने के लिए कार्य करना। जब मनुष्य राग–द्वेष से ग्रसित हो जाता है तो दूसरों को नुकसान पहुॅचाने के लिए कार्य करने लगता है। ऐसा करके वह सोचता है कि वह संतुष्ट हो गया। ऐसा भ्रम पाल लेता हैं। वर्तमान में ऐसी गतिविधियों की अधिकता हो गई है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि वही कार्य किया जाय, जिससे मानव मात्र का कल्याण होता हो। कर्म के स्वरूप पर विचार करना बहुत आवश्यक हो गया है।